भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–16, अंक–1–2 शुक्रवार, 26 फर.' 93	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी जनवरी, फरवरी 1993	वार्षिक चन्दा–30.00 प्रति अंक : 3.00

ब्रह्मप्रवाह

साकाररूप की अनुभूति

प्रगट सूर्य के बिना अंधेरा टल नहीं सकता, प्रगट दूध पिए बिना भूख मिट नहीं सकती। वैसे ही प्रगट भगवान के स्वरूप के बिना आत्यंतिक कल्याण भी हो ही नहीं सकता। मोक्ष होना आसान है, मुक्ति मिलना भी खास मुश्किल नहीं है, परन्तु ज्ञानप्रलय करके आत्मा की सर्वोपरि साक्षात्कार स्थिति–निर्विकल्परूप से भगवान के सच्चे मूलस्वरूप को प्राप्त करने की, धारने की और स्वामी सेवकभाव से निरन्तर सेवा-भक्ति में निमग्नता रखनी–यह प्रगट गुरुरूप हरि के बिना अशक्य ही है। फिर चाहे कोई पंडित हो, त्यागी हो, नैष्ठिक ब्रह्मचारी हो या परोक्ष का अनन्य भक्त ही क्यों ना हो ? माया से निरन्तर निर्लेपभाव गुणातीत ज्ञान सिद्ध किए बिना और प्रगट गुरुहरि की अनन्य निष्ठा बिना संभव ही नहीं। यह है दिव्य साकारभाव की भावना, जो स्वामिश्रीजी ने सनातन सिद्धांत के रूप में वचनामृतों में तथा पू. स्वामी की बातों में और पू. योगीजी महाराज ने अपनी बातों में रहस्यरूप में स्वयं की रुचि व अभिप्राय बताकर सूक्ष्मभाव से सूचित किया है और प्रगट संत या सत्पुरुष द्वारा ही उसका साक्षात्कार हो सकता है।

नग्न सत्य कहने वाले सोक्रेटीस को इस लोक के अधूरे नासमझ मनुष्यों ने जहर दिया। क्योंकि ऐसा खुला सत्य पचाना मुश्किल हो गया था। वैसा ही सभी महाविभूतियों के जीवन मे दिखाई पड़ता है। ताजा ही उदाहरण महात्मा गाँधी का है। क्राईस्ट व गेलीलीयो को भी समाज ने क्रुर सजा सत्य बोलने पर ही दी। तब भी, असुरभाव विलीन होकर, नग्न सत्य बाहर आया है और जगत का उद्धार भी उसी से ही होने वाला है। ऐसी पुण्य आत्माओं की मीठी नजर से और पू. योगीजी जैसे साक्षात् संत स्वरूपों से ही जीवन शांत, सरल और सुखी रह सका है और सत्संग हमेशा दृढ़ हुआ है। परन्तु मायिकभाव रहता है, अन्तःकरण की कल्पनायें और शंकायें रहती है। भेददृष्टि रहती है। तब तक यह जगत रहता है, यह प्रकृति रहती है। और इस देह के साथ उसकी सर्व उपाधियाँ भी आधि, व्याधि खड़ी करके जीव को बेमतलब ही

परेशान कर देती है। प्रगट गुरुरूप परम चिन्तामणि की समग्रतया महिमा समझते जीव तत्काल बलवान–वच.मध्य 63 के मुताबिक हो जाता है। वच. अंत्य. प्र-2, 38, 39, मध्य-54, प्र-54 के मुताबिक सत्संग दृढ़ होने पर वच. कारियाणी–1.7, मध्य-66, अंत्य.28 के मुताबिक इन्द्रियाँ–अन्तःकरण और जीव के भ्रामिक रूप बदल जाकर, देह रहते हुए ही सत्पुरुष के द्वारा छत्तीस दंश खाकर पिल्लु से भ्रमरी ही बन जाता है और दंश का अखंड अनुसंधान रखकर स्वामी–सेवकभाव से प्रगट संत के चरणों में रहकर ब्रह्मस्वरूप के भाव में स्वामिश्रीजी की उपासना और आज्ञा का पालन करता है। भगवान का ही सुख देह रहते हुए अनुभव करता है, भोगता है और प्राप्त करके दूसरों को भी उसकी प्रतीति कराता है तथा दिव्य आनन्द में दिव्य साकार भाव की दृढ़ प्रतीति के रूप में सभी की डूबो देता है। उस समय तो हम देहभाव बिल्कुल भूल जाते हैं। जो कुछ ढूँढते रहते थे, जिसकी कामना थी, भीतर में जो सूनापन लगता था–वह आश्वासन प्राप्त करके, परम शांति, आनन्द और सुख भोगा जाता है और वही इच्छा व अभीप्सा रहा करती है। स्वामी और श्रजी पर के पर लगते रहते हैं। स्वामी और श्रीजी पर के पर लगते रहते हैं। चैतन्यदृष्टि हो जाती है व किसी का दोष, अभाव, क्षति नजर में ही नहीं आती। अरे, महाभूतों और प्रकृति का कार्य मात्र नजर में नहीं आता। प्राणवायु से उत्पन्न होते फव्वारे की भाँति असंख्य संकल्पों शंका-आशंकायें विलीन हो जाती हैं। ज्ञान समाधिरूप से अखंड स्मृति सदैव रहती है और दिव्यस्वरूपों साकारभाव की अतिशय दृढ़ प्रतीति–वच.प्र.75 के मुताबिक धाम, धामी और मुक्तों सनातन, शाश्वत् व साकार आत्यंतिक प्रलय के बाद भी है–वह रहती ही है। समागम करते-करते वह अनुभवगम्य प्रत्यक्ष गुरुहरिश्री के चरणों में ही निमग्न रहने का आसरारूपी-शरणागतिरूपी खूब आसान व सर्वोपरि विहद अक्षरधाम देह रहते हुए प्राप्त करने का–अनुभव प्राप्त करने का मार्ग खुल्ला करता है और गुणातीत ज्ञान का प्रकाश सर्वत्र सबीज फैलाया करता है। असंख्य जीवों को शिवरूप में से परम शिवरूप वासुदेव में प्रवेश कराकर मूल अनादि ब्रह्म में गति कराता है और उसके साधर्म्य को पाकर स्वामिश्रीजी की सेवा का परम अधिकारी बनाता है।

ऐसे संतों के पाँव की धूल महाराज भी सर पर लेते हैं। वच. प्र-37। इनके दर्शन से अनंत पतित जीवों का उद्धार होता है। परन्तु प्रत्यक्ष गुरुरूप हरि में साकारभाव की अतिशय दृढ़ता जब तक ना होवे तब तक कर्ताभाव, निर्दोषबुद्धि और अंतराय टलते नहीं, वह कसर रहती है। अहंभाव रहता है और उससे ही दिव्य सुख मिलता नहीं है। इसलिए प्रगट साक्षात् अपने गुरुजी के चरणों में निष्कपटभाव से जरा भी अंतराय रखे बिना हरके सत्संगी अपने मन को सौंप दे और अक्षरदेरी की महिमा गाया करे जिससे खूब ही शांति, आनंद व सुख का अनुभव होगा। महाराज को चिंता सौंपने के बाद स्वामिश्रीजी जरूर अखंड रक्षा करेंगे ही। दास के दुश्मन प्रभु कभी हो नहीं सकते, इसलिए जो करेंगे उससे सुख ही होगा। सो दिव्य साकारभाव की अतिशय दृढ़ प्रतीति–वच. प्र.37 की समझदारी दृढ़ करके हरेक सत्संगी ऐसी प्रत्यक्ष-प्रगट की निष्ठा जीवन में साकार करें और धाम का दिव्य सुख का अनुभव करें, भोगे व प्राप्त करें।

–प.पू. काकाजी महाराज

1953

स्वामी की बातें

269. भगवान व एकांतिक मे निश्चय हुए का लक्षण यह है कि जैसे घर में सौ करोड़ मन दाने हों व रुपया-पैसा हो तो दुकाल पड़ने पर मरने का भय नहीं रहता और दो हजार लठैत साथ में हों तो लुट जाने का डर नहीं रहता; वैसे ही निश्चय वाले को काल, कर्म, माया का डर नहीं रहता और अपने आपको वह पूर्णकाम मानता है व भगवान के सिवा किसी की अपेक्षा नहीं रखता। *प्र–5,2*

270. दिव्यभाव व मनुष्यभाव को एक समझे तो अवगुण नहीं आये। जैसे पील्लु भ्रमरी का चिंतन करने से स्वयं भ्रमरी ही बन जाती है और लोहा पारस के संबंध से सोना बन जाता है व हीरे की परीक्षा जौहरी के संग से आती है व मिट्टी कुम्हार की कसनी सहती है तब उसमें से बर्तन बनता है, वैसे ही भगवान व एकांतिक संत को पहचानने से ब्रह्मरूप हो पाते हैं और एकांतिक संत को पहचानने के बाद कुछ करना शेष नहीं रहता। *प्र–5,3*

271. भगवान व एकांतिक का संग, वही सत्संग है–इसके अलावा तो आधा-अधूरा सत्संग कहा जाये। *प्र–5,4*

272. आत्यंतिक मोक्ष होवे, वह ही मोक्ष कहा जाये और अन्य धाम में जाने पर तो गर्भवास में फिर आना पड़ता है व जब तक गर्भवास में आना पड़े, तब तक मोक्ष हुआ नहीं कहा जा सकता। ऐसा मोक्ष तो प्रगट भगवान और प्रगट भगवान के एकांतिक संत का आसरा करने से हो पाता है; अन्य किसी के द्वारा नहीं हो सकता तथा संत तो भगवान जैसे समर्थ होते हैं। *प्र–5,5*

273. छोटे बच्चों को जब डर लगता है तब वे माँ-बाप के गले से लिपट जाते हैं, उसी प्रकार हम पर कष्ट आने पर–विपत्ति के समय–भगवान तथा इस साधु के गले लिपट जाना चाहिए, सो वे रक्षा करेंगे ही। फिर नथु पटेल ने पूछा कि गले से किस प्रकार लिपटा जाये ? तब उत्तर दिया कि उन्हें याद करना और भगवान तथा इस साधु का जिसे संग प्राप्त हुआ है उस पर कोई विघ्न नहीं रहता क्योंकि उसकी तो भगवान रक्षा करते हैं। वहाँ घोड़ी का दृष्टांत दिया कि नदी में तेज बहाव आने के कारण उस पर सवार व्यक्ति चार बार गिर गया और घोड़ी ने चारों बार पीछे घूमकर उस सवार को तार दिया, इस प्रकार रक्षा करते हैं। *प्र–5,6*

274. गढ़डा वाले ठक्कर नारण प्रधान ने प्रश्न पूछा कि जिसे विषय में दोष का ख्याल नहीं आया हो उसके विषय किस प्रकार टलेंगे ? तब उत्तर किया कि समुद्र का जल वैसे तो सूख नहीं सकता परन्तु आत्यंतिक प्रलय होने पर सूख जाता है, उसी प्रकार यदि आत्यंतिक ज्ञान हो जाये तो विषय टल जाते हैं। वह आत्यंतिक ज्ञान तो इस साधु को पहचानना वही है। उससे विषय टल जाते हैं और उसके बिना तो दोषों का ध्यान करते-करते कई काल में टलते हैं। वहाँ गरुड़ का दृष्टांत दिया कि गरुड़ रह गया और चिड़िया पार उतर गई। *प्र–5,7*

275. बोटाद में हरिशंकरभाई को बात करी–एक जानकर के कंकाल पर दो पक्षी बैठे थे। उनमें से एक पक्षी को उसमें थोड़ा-सा दोष का ख्याल पड़ने के कारण वह उड़ गया और एक पक्षी बैठा रहा। जो बैठा रहा था उसे

समझ आने पर उड़ जाने वाले पक्षी का गुण लेने से व अपने दोष का (कंकाल में आसक्ति का) ख्याल आने से मोक्ष हुआ। और जो पक्षी उड़ गया था उसे कंकाल में वैसे आसक्ति तो रही ही थी, सो दोबारा जन्म लेना पड़ा। *प्र–5,8*

276. श्रीजी महाराज ने हरिशंकरभाई को स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि निश्चय में कसर है इसलिए आपको यह जन्म दिलवाया है, सो निश्चय परिपक्व करना और आज्ञा पालना, तब काम पूरा हुआ। *प्र–5,9*

277. हरिशंकरभाई ने पूछा कि प्रगट भगवान और ये मूल साधु मिले हैं उससे स्वयं को पूर्णकाम मानना या वासना टल जाये तो मानना ? तब उत्तर दिया कि निश्चय हो गया सो वासना टल चुकी, अतः पूर्णकाम मानना और आज्ञा पालन की रुचि रखनी व विपरीत देशकाल के कारण यदि आज्ञा न पाल सके, तब भी उसे विघ्न नहीं है। *प्र–5, 10*

278. कई ऐसी बात करते हैं कि हमें देवलोक वगैरा में नहीं जाना परन्तु अल्प विषय में तो खींचे जाते हैं, उसका क्या कारण है ? और वह अक्षरधाम में जायेगा या नहीं ? इस प्रश्न का उत्तर किया कि अज्ञान के कारण विषय में खींचे जाते हैं, परन्तु प्रगट भगवान तथा इस साधु का दृढ़ आसरा है, सो वह अंत में अक्षरधाम में जायेगा। इस प्रकार का आसरा नहीं किया हो और ऐसी बात भले ही करता हो, परन्तु वह अक्षरधाम में नहीं जायेगा। जिसके साथ उसकी प्रीति होगी, उसके धाम में जायेगा। वहाँ उदाहरण दिया कि गायकवाड़ का कुंवर चाहे मूली के लिए रोये, परन्तु राजगद्दी तो उसी को ही मिलेगी। *प्र–5, 11*

Statement about Ownership and other particulars about news paper

'भगवत-कृपा'— 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society A-103, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sadhu Mukundjivandas
Nationality	:	Indian
Address	:	Yogi Divine Society A-103, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
4. Publisher's Name	:	As above
Nationality	:	
Address	:	
5. Editor's Name	:	As above
Nationality	:	
Address	:	
6. Owner's Name	:	As above
Nationality	:	
Address	:	

I, Sadhu Mukundjivandas, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
Sadhu Mukundjivandas
Signature of Publisher

Date: 25th Feb, 1993

विज्ञप्ति

आपने 3rd Feb.'93 दिल्ली मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा में दिल्ली आने की तैयारी करी होगी....परन्तु अयोध्या में घटी घटना से हुए उपद्रवों के कारण संगममर की मूर्तियाँ समयावधि के अनुसार तैयार नहीं हो पाई.....सो मजबूरन मूर्तिप्रतिष्ठा करने का यह सारा कार्यक्रम बदलना पड़ा है। यह महोत्सव अब 12 और 13 अप्रैल' 93 को मनायेंगे...क्योंकि 13 अप्रैल 1985 में 'बैसाखी' के ही दिन प.पू. काकाजी महारा ने दिल्ली मंदिर की शिलान्यासविधि की थी..... सो उसी पवित्र स्मृति दिन पर 'मूर्तिप्रतिष्ठा' करने का निश्चय किया है।

आप सबको इससे पहले की 'पत्रिका' द्वारा 3Feb.' 93 को मूर्तिप्रतिष्ठा होने का आमंत्रण मिला होगा.....पर पत्रिका इस निर्णय से पहले ही छप चुकी थी।

अप्रैल में छुट्टियाँ होने के कारण Rly. reservation के लिए काफी rush होगा—सो अप्रैल में आने के लिए आप अपनी Rly. tickets अभी से बुक करा लेना, ताकि reservation मिलने में तकलीफ न हो।

'पू. काकाजी—मेरी निगाह में'

प.पू. काकाश्री स्वरूपनिष्ठ और महिमा की मूर्ति थे।

सो बापा की अंतर की प्रसन्नता ले ली

और

भगवद्भाव को पा लिया—प्रभु की मूर्ति बन गये !

गुरुहरि योगीजी महाराज के

अंतर के अभिप्राय के मुताबिक जीवनभर वर्तते ही रहे

और

बापा के जीवनसूत्र

'संप, सुहृद्भाव और एकता' को

जीवनमन्त्र बना लिया

तो

पू. काकाश्री सुहृद्सम्राट बन गए,

जिसके फलस्वरूप

अद्भुत सुहृद्भाव वाला

एक आत्मीय समाज स्थापित हो गया !

–प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

❄ ❄ ❄ ❄

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	5.3.93	शुक्रवार	एकादशी, व्रत
2.	दि.	7.3.93	रविवार	पूर्णिमा, ब्र.स्व. भगतजी महाराज का प्राकट्य दिन
				ब्र.स्व. काकाश्री स्वधामगमन दिन,
				होलिका दहन
3.	दि.	8.3.93	सोमवार	धूलेण्डी, होली रंगोत्सव,
				प.पू. साहेब की जन्म जयंती
4.	दि.	18.3.93	गुरुवार	एकादशी, व्रत
5.	दि.	24.3.93	बुधवार	नवरात्रे प्रारंभ

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminararan Marg. Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at R.P., Printers, Shahadra, Delhi-110032